यह दंतुरित मुसकान
फसल

कविताओं का सार / प्रतिपाद्य

(1) यह दंतुरित मुस्कान कविता में शिशु के नए दाँतों से युक्त मुस्कान का वर्णन किया गया है। कवि के अनुसार यह मुस्कान कठोर हृदय वाले व्यक्ति को भी पिघलाने की क्षमता रखती है। उसकी मुस्कान देखकर लगता है कि एक साधारण से घर में कमल का फूल खिल गया हो। कवि को इस बात का दुख है कि वह इस सुख से बहुत समय के लिए दूर था। वह फिर भी इसके लिए बच्चे की माँ को धन्यवाद करता है।

(2) फसल कविता हमें उन सबके योगदान को याद दिलाती है, जिनके कारण एक फसल स्वरूप पाती है। कवि के अनुसार यह किसी एक के योगदान से नहीं अपितु बहुत सारी नदियों के पानी, बहुत सारे किसानों की मेहनत, बहुत स्थानों की मिट्टी के गुण धर्म, सूरज तथा हवा के योगदान का परिणाम है। इस तरह वह कृषि के महत्व तथा उसमें काम करने वाले सभी के योगदान को हमारे सामने रखता है।

दोनों कविताओं का भाव

- दंतुरित कविता का भाव है कि संतान सुख जीवन में सबसे बड़ा सुख है।
- फसल कविता का भाव है कि फसल के पीछे किसी एक का योगदान नहीं है। इसमें बहुत से तत्वों तथा लोगों का योगदान छिपा होता है। हमें उनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

यह दंतुरित मुस्कान कविता की भाषा शैली की विशेषताएँ

- सरल तथा सहज भाषा
- प्रवाहमयी भाषा
- गेयता के गुण से विद्यमान
- अलंकार से युक्त
- वात्सल्य रस से युक्त
- मुहावरेदार

फसल कविता की भाषा शैली की विशेषताएँ

- प्रवाहमयी भाषा
- गेयता के गुण से विद्यमान
- पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार की छटा से युक्त

यह दंतुरित मुस्कान कविता का उद्देश्य

- संतान सुख को दर्शाना।
- वात्सल्य सुख को समझाना।
- समाज के निर्माण में स्त्री के महत्व को समझाना।

फसल कविता का उद्देश्य

➳ आज के समय में लोगों को कृषि का महत्व समझाना।
➳ फसल के निर्माण में योगदान देने वाले तत्वों तथा लोगों का परिचय हमसे करवाना।

यह दंतुरित मुस्कान कविता का संदेश / शिक्षाएँ

➳ इस भागदौड़ भरे जीवन में अपने बच्चों को समय देना चाहिए।

फसल कविता का संदेश / शिक्षाएँ

➳ कृषि हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसकी उपेक्षा न करें।
➳ सबके योगदान की सराहना होनी चाहिए।